पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

खासी समाज की मातृवंशीय व्यवस्था

डायाफिरा खारसाती

परिवार सामाजिक संगठन का एक हिस्सा है। परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें सदस्यों को रिश्तेदारी या शादी से जोड़ा जाता है। समाज परिवारों से ही बनता है। वंश के नियम, निवास, विरासत और प्राधिकार से ही परिवार या समाज के पितृवंशीय या मातृवंशीय होने का पता चलता है।

मातृवंशीय व्यवस्था समाज की वह व्यवस्था है जहाँ माँ के माध्यम से वंश का पता लगता है और पितृवंशीय व्यवस्था में पिता के माध्यम से ही वंश का पता तो चलता ही है, साथ में संपत्ति पर अधिकार भी पिता का ही होता है। किसी भी समाज का पितृवंशीय होना उसके पितृसत्तात्मक समाज होने का प्रमाण भी देता है। यह व्यवस्था आम है, लेकिन मातृवंशीय व्यवस्था असामान्य मानी जाती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि मातृवंशीय समाज मातृसत्तात्मक भी हो यह ज़रूरी नहीं। खासी के एक प्रसिद्ध प्रचलित लेखक लिखते हैं कि - "मातृवंशीय और पितृवंशीय समाज में एक अंतर यह है कि पुरुष पर वंश, विरासत और उत्तराधिकार तीनों तत्वों को केंद्रित करता है। कुल नियंत्रण पिता के हाथों में होता है। वहीं मातृवंशीय समाज में, महिला/बहन इन तीन तत्वों को अपने भाई के साथ साझा करती है।"[1]

अभी भी जहाँ मातृवंशीयता का अभ्यास किया जाता है उनमें थाईलैंड के लाओ, ताइवान के अनीस,चीन के मुसुओ, इंडोनेशिया के मिनाकबु प्रचलित हैं। भारत के मेघालय की तीन जनजातियाँ खासी, जयंतिया और गारो भी इसी व्यवस्था का पालन करते हैं।

मेघालय के खासी समाज के लोग पूर्वोत्तर भारत में सबसे शुरुआती दौर में बसने वालों में से एक हैं, जो एक परिपक्व सामाजिक मातृवंशीय व्यवस्था का पालन करते हैं। खासी समाज में महिलाओं को असामान्य गरिमा और महत्व की स्थिति का आनंद प्राप्त होता है। जिस देश में पितृसत्तात्मक समाज की बहुलता है वहीं यह राज्य एक उदाहरण के तौर पर अन्य ऐसे देशों के मुकाबले बराबरी करता है। इसके मातृवंशीय होने का कारण यह बताया गया कि प्राचीन काल में जब परिवार के पुरुष युद्ध के लिए जाया करते थे तो माँ से वंश को बढ़ाना और संपत्ति को संभालने की ज़िम्मेदारी उन्हें देना लोगों को सुविधाजनक लगा। लेकिन 'U shynrang khat ar bor bad ka kynthei shibor' कहावत भी इस समाज में प्रचलित है जिसका अर्थ यह है कि - पुरुष के पास बारह शक्तियाँ हैं और स्त्रियों के पास एक। कहने का तात्पर्य यह है कि इस समाज का मातृवंशीय

होना इस बात का संकेत नहीं है कि यह मातृसत्तात्मक भी है। अगर परिवार की संपत्ति की संरक्षिका स्त्री है तो उसपर नियंत्रण पुरुष का ही होता है। खासी समाज के मातृवंशीय होने को निम्नलिखित आधारों पर समझा जा सकता है-

वंश के आधार पर :

जिस परिवार में वंश को माता की रेखा के माध्यम से खींचा जाता है, वह एक मातृवंशीय परिवार है। यहाँ के लोगों में यह कहावत प्रचलित है कि "लॉन्ग जैड ना क्यन्थेइ"- अर्थात् "औरत से ही वंश है"। पारंपरिक रूप से माना जाता है कि 'यावबेई'(मूल पूर्वज) और 'शिक्पोह'(एक कोख) से ही इस समाज के वंशज हैं। कहने का तात्पर्य है कि माता का स्थान इस समाज में उत्तम है। कुर(मातृ परिजन) और खा (पितृ परिजन) के बीच अंतर इस समाज में स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है। इस समाज में 'क्पोह' कोई सामाजिक संस्था तो नहीं है लेकिन परिवार में यह एक महत्वपूर्ण संरचना है। यहाँ कोख का इतना महत्व है कि किसी भी संकट या ख़ुशी के समय,एक ही कोख से उत्पन्न वंशज मदद के स्रोत बनते हैं, जो मातृवंशात्मक समाज में एकता और एकजुटता को उजागर करता है।

इस समाज में कुल या गोत्र जैसी अवधारणा का पालन होता है जिसे 'कुर' कहा जाता है। यह एक बहिर्मुखी इकाई है और हर सदस्य उसी कुर के हर दूसरे व्यक्ति का परिजन है और इस कुर के सभी सदस्यों का एक ही उपनाम होता है। कुर के एक सदस्य होने से कबीले के अन्य सदस्यों को पहचानते हैं और काल्पनिक सांत्वना के आधार पर "एक-दूसरे को भाई-बहन के रूप में स्वीकार करते हैं। कुर तब अस्तित्व में आती है जब खासी महिलाओं की महिला बच्चों की शादी हो जाती है और बच्चे पैदा करके उनकी माताओं के वंश को बनाए रखा जाता है। ऐसी प्रत्येक विवाहित बेटी से 'का क्पोह' की शुरुआत होती है। इसी क्पोह अर्थात् कोख से ही किसी वंश का पता चलता हैं।

अधिकार के आधार पर :

एक मातृवंशीय समाज का एक और पहलू यह भी है कि परिवार में निर्णय लेने का अधिकार मामा के पास होता है और बाद में यह अधिकार भतीजे के पास जाता है। मामा शादी, धार्मिक संस्कार और संपत्ति से संबंधित सभी मामलों के प्रति जिम्मेदारियां रखते हैं ।

खासी समाज में मामा को पारिवारिक संपत्ति का प्रशासक माना जाता है। यह एक मातृवंशीय समाज है जहां अधिकार मामा के हाथों में होता है, और महिला को घर और संपत्ति, पारिवारिक अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों के संरक्षक का विशेषाधिकार प्राप्त है। मामा परिवार के मामलों में एक अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं । जो लोग मूल खासी धर्म का पालन करते हैं उनमें मामा की भूमिका तो महत्वपूर्ण है ही, खासी ईसाई परिवार में भी मामा के सुझाव और निर्णय का पालन किया जाता है। इस प्रकार, परिवार के कर्तव्यों को तीन तरह से विभाजित किया जाता है - महिलाएं चूल्हे के लिए, पिता घर की

आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए और मामा संपत्ति, धर्म, जन्म, नामकरण समारोह, मृत्यु, विवादों को निपटाने और शादी के समय कुलों के बीच मध्यस्थता से संबंधित पारिवारिक मामलों के लिए जिम्मेदार होते हैं। यह मातृवंशीय समाज की एक विशेषता है जहां प्राधिकार मां के परिवार के एक पुरुष सदस्य के साथ निहित होता है, जबकि एक पितृसत्ता में घर का अधिकार पिता के परिवार के पुरुष सदस्यों के साथ निहित रहता है "मातृवंशीय समाजों में मां का भाई अपनी बहन और बहन के बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि वह उनके अभिभावक के रूप में कार्य करता है"।[2] वह अपनी मां के घर और उसकी पत्नी के घर समान ज़िम्मेदारी के साथ मामा और पिता की भूमिका को पूरा करता है।

निवास के आधार पर :

मातृवंशीय व्यवस्था के अंतर्गत परिवार माँ के निवास-स्थान से ही जाना जाता है। पति, विवाह के बाद पत्नी के जन्मस्थान में रहने के लिए चला जाता है। यह खासी समाज का रिवाज है कि पुरुष शादी के बाद पत्नी के घर में जाता है और रहता है, लेकिन उसके बाद भी वह अपने ही कुर (मातृ परिजन) और खा (पितृ परिजन) का अहम हिस्सा होता है। लड़का शादी के बाद भी अपने कुल के साथ अपने रिश्ते को नहीं छोड़ता है और न ही उसका उपनाम बदला जाता है।

विरासत के आधार पर :

एक समाज को मातृवंशीय तब कहा जाता है जब विरासत भी मां की रेखा से निर्धारित होती है और बेटियां संपत्ति की वारिस होती हैं। संपत्ति की वारिस होने का अधिकार महिलाओं के पास है। सबसे छोटी बेटी, जिसे खाददुह कहते हैं, परिवार की संपत्ति की संरक्षक होती है, और आगे यह अधिकार उसकी सबसे छोटी बेटी को मिलता है और इस तरह आगे भी पारित किया जाता है। अन्य बहनों का भी परिवार की संपत्ति पर एक हिस्सा और अधिकार होता है, और वे भी खड्डूह के घर के रखरखाव के लिए बाध्य हैं। यदि खाददुह अपने कर्तव्यों में विफल रहती है, या यदि उसके पास एक महिला बच्चा नहीं है तो संपत्ति मां की बहनों और उनकी महिला संतानों के पास जा सकती है।

खासी मातृवंशी समाज में बदलाव :

किसी समाज में परिवर्तन के आंतरिक और बाहरी दोनों तत्व होते हैं, जो उसकी विशिष्ट भाषा, संस्कृति और विश्वास-प्रणाली के भीतर काम कर रहे कारकों द्वारा लाया जाता है। सामाजिक परिवर्तन मुख्य रूप से सामाजिक संरचना में उपकरणों के संशोधन का संकेत है, जो व्यवहार, सांस्कृतिक साइफर्स, सामाजिक प्रणाली या मूल्य प्रणालियों के मानदंडों में परिवर्तन द्वारा परिभाषित किया जाता है।

खासी मातृवंशीय समाज भी औपनिवेशिक शासकों, ईसाई मिशनरियों और भारत के विभिन्न हिस्सों से अन्य समाजों के संपर्क से परिवर्तन की हवाओं का सामना कर रहा है। खासी समाज में उपनिवेशवाद और ईसाई धर्म के आने के बाद सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत हुई- "अपनी

पश्चिमी संस्कृति के साथ अंग्रेजों के आगमन ने खासी संस्कृति पर ही बहुत प्रभाव डाला "।[3]

ब्रिटिश शासन का प्रभाव ही रहा होगा कि अभी यह स्थिति यहाँ बन गयी है कि इस व्यवस्था में जो भूमिका मामा निभाते आये हैं वह पिता भी निभा रहे हैं। कहा जा सकता है कि यह केवल भूमिका का परिवर्तन नहीं बल्कि यह सांस्कृतिक प्रतिमान का भी परिवर्तन है जो खासी समाज की जीवन-शैली,मूल्य-प्रणाली और व्यवहार को प्रभावित करता है। कहा जा सकता है कि खासी समाज मातृसत्तात्मक न होकर मातृवंशात्मक है। यह स्त्री-प्रधान समाज होने के बावजूद परिवार के सदस्यों में निर्णय लेने का अधिकार पुरुषों को ही प्राप्त है। महिलाएँ सलाहकार, मध्यस्थ और अनुशासनात्मक और ज़रूरत के समय एक सहायक के रूप में अपनी भूमिका निभाती आ रही आ रही हैं। पुरुष की बहन के बच्चों पर उनका नियंत्रण इस समाज में आम है। माँ अगर बाहर किसी कार्यालय में काम करती हो या अन्य कोई काम, तो वही बच्चों का पालन-पोषण करती है। मामा और पिता परिवार के रक्षक तो हैं साथ ही में वे सलाहकार और निर्णयकर्ता भी हैं।

एक आम मिथ्या धारणा है जिसे कई विद्वानों ने बरकरार रखा है कि खासी समाज एक 'मातृसत्तात्मक' समाज है और महिला पुरुष से शक्तिशाली हैं, लेकिन तथ्य यह है कि यह एक मातृवंशीय समाज है।

खासी समाज की व्यवस्था के बारे में जानकारी का पर्याप्त भंडार है, लेकिन आज भी इसके ऐसे पहलू हैं जिन पर शोध और फिर से जांच की जरूरत है।

संदर्भ-सूची:

1. Kharkrang,Roland,Matriliny on the march,a closer look at the family system,past and present,of the khasis in meghalya,may 2012.

2. Nongkynrih, A.K. and Lyngdoh, Angelica Quneenie. (January-June 2015). Mother's brother in matrilineal societies: A study of Khasi matriliny. The NEHU Journal XIII.1: 33-46.

3. Mawrie, Branes. (2009).Khasi society and the impact of modernity: Challenges to identity and integrity. In Medhi, Birichi K., Athparia, R.P. and Jose, K, editors, Tribes of North-East India Issues and Challenges, pages 176-195, Omsons Publisher, New Delhi.

संपर्क-सूत्र:
पी.एच.डी शोधार्थी
हिंदी विभाग, नेहु ,शिलांग